

आश्विन मकरवादि

K Y

3807

ASHA ARCHIVES

नाम

॥ १ ॥

ॐ नमो वृद्धाय ॥ ॐ नमो धर्मा
म ॥ महर्षि विद्वज्जगत्क
पत्रमि न सूरसंघे स्थव्यमाना
जह्नु रत्ने रुक्मिणी ॥ समस्त
यदवासान्क मजो वज्रकनकम

जा व्यदे ज्यो

य ॥ ॐ नमो संधाय नमान
शो सा कर्त्ति ह्मूनि शो ॥ अ
ऊना धै ॥ कवल यदजन श
चि नन स्तु तर्षला क्ति नस्तु ॥
म संतु ल यव ऊना ॥ पाताल

॥ १ ॥

यत्तु जंगम दुष्टि मति किज रत्ने भक्त सर्वा भका ना ॥ कैलास मी विलास्य पुमदि न हृदया य
च विद्या धन द्या ॥ शुभा ददात्र रुग्णं मृनि वज्र वचनं रक्षा गुमा यानि सर्व ॥ आयां का सुशका
मा श्रुत्वा सूरनना सिद्धि गंधर्व नाग ॥ ऊना कृता जा कि नत्रि द्या गज दहजि ह्ना गकु व
आदि दवा ॥ पूजा पंचाय चार्जे शि र्वन नमि नं मद नि दुल्ल रयं ॥ ॐ नमो कया ई वा च या मि
पुन मि न मि न सा स्वं महा या न सूर्य ॥ ॐ नमो वृद्धाय ॥ ॐ नमो धर्मा य ॥ ॐ न

ला

नाम

॥ २ ॥

मासं घाय नमानमः ॥ ॐ नमो नमो मंजुनाथाय नमानमः ॥ ॐ ॥ अथ वज्रधनं मीमांसुः
दानं दमकपजः ॥ वेलाय विजयि विजाः गुरुजाट्कलियं गज ॥ १ ॥ विबुद्धपुद्रीका
प्रास्तुलकमलानन ॥ पाल्मालयं वज्रवज्रन स्वकजनमूर्कमूर्क ॥ २ ॥ रुक्मिणी गजगण
मूर्वे जलने वज्रपातिरि ॥ दुर्दानकदमकविजे वीजविरुत्सपुदीरी ॥ ३ ॥ उल्लालयः
शोभकजि पुस्तुलवज्रकाटिहि ॥ पुष्पाय महाकनका जगदर्थकर्त्रे पजे ॥ ४ ॥

॥ २ ॥

हृदयगुल्फागये मूर्दिनेः काधविग्रहपिहि ॥ वृद्धकृष्णकर्त्रे नाथे सार्द्धपुनक्तविग्रहे ॥
॥ ५ ॥ पुलम्पनाथसंबुद्धं रगवन्तं गथागर्भं कनाजुलिपुगाएत्वा एकं कायस्त्रिगा ॥ ६ ॥
गुण ॥ ६ ॥ मूर्दिनायममार्थयः श्रुतं कयायं श्रविश ॥ मायाजालारि संवाधिय
थालारि रुवास्पह ॥ ७ ॥ श्रुतं नपंकमग्ननां कंगवाकलं वगसा ॥ हिनाय सर्वसत्ता
नां मनुजुरुलाफय ॥ ८ ॥ प्रकाशयो गुसंबुद्धा रगवंतु सा सा जगद्गुरु ॥ महा

नाम ॥ समर्थगत्तु वृद्धि यासयवित्तु ॥ ९ ॥ रगवन् ज्ञानकायस्य महो वीरस्य गीत्युत ॥
 मरुती ज्ञानसत्त्वस्य ज्ञानमूर्तिस्वयंरुव ॥ १० ॥ गतिनाथं मुदाजाथं महाथं मत्त
 ३ ॥ माणिमान ॥ आदिम ध्यातुं कल्याणि नामसंगि किमरुमा ॥ ११ ॥ यागिर्न तापिनाव ३ ॥
 हे तापिष्येकं कनागना ॥ प्रफुल्लना चैवैव क्षाया तापेकं पुनः पुनः ॥ १२ ॥ मायाजा
 लमहागनु ॥ यावास्मिन्संप्रगीयते ॥ महावज्रधरे हृदये जपमये संकुक्षमिति ॥ १३ ॥

अहं चेनाध्यायिष्यामि निर्यामि च दधाय ॥ यथा रगवान्नाहं नाथ सर्वसंबुद्धगुणं च
 क ॥ १४ ॥ प्रकाशमिष्ये सत्तानां यथा गयविलगपुन ॥ अरगवक्त्रं नागमुय अरग
 वा ज्ञानज्ञानम् ॥ १५ ॥ नुवंस ध्यायगुक्कनु वज्रपातित्वागनः ॥ कना जालिपुनारु
 तापुर्कं कायस्ति नागगुनः ॥ १६ ॥ अथ ध्याय ज्ञानगाथा पाठग ॥ १७ ॥ अथ साक
 मनि रगवान् सर्वक्षादिपदाशुमः ॥ निर्हु मर्यायनालीना स्वजि ज्ञात्व मूखांकु ता

नामा ॥ १ ॥ स्मिन्संदग्धलाकारां मया यद्ययं गमधनः ॥ तैलाकलासकजर्हं चतुर्मात्राजि
 सासनं ॥ २ ॥ शिलाकलायुत्रयस्यावृत्तामधुनमागिता ॥ प्रत्येकानुगुहकं वरुणपा
 ४ ॥ ४ ॥ तिमहावली ॥ ३ ॥ साधुवरुणधर्मा मोनसाधुवरुणपाक्षय ॥ यस्तुजगदिनाथय ४ ॥
 महाकन्यायानिना ॥ ४ ॥ महाभानानसंगिनि पविशामघनागनी सकृशी क
 नकायस्यं कुण्डुसमद्यन ॥ ५ ॥ गस्ताधुदगया म्पवः श्रुहकगुहकाधिप ॥ ६ ॥

श्रुत्स्वमकागमनास्तसाधुगवन्निनि ॥ ६ ॥ पुनिवचनगुमभाष ॥ ७ ॥ अथसा
 क्ममनिगुगवान् सकलमनुकुलमहन् ॥ मन्तुविद्याधर्मे कलं यवला क्कलं गुयः
 १ ॥ १ ॥ लाकालोकदुर्जकुलं लाकालोककुलमहन् ॥ महासेदाकुलवायः महासीपः
 कुलमहन् ॥ २ ॥ षड्कुलावलाकनगुमभाष ॥ ३ ॥ ४ ॥ सापसमनुजाजान संकका
 मद्यया ५ या ॥ श्रुत्स्वादधसलीगभाषावर्कस्मगिताम्यने ॥ ४ ॥ १ ॥

नाम

॥ ६

॥ १ ॥ महासायाधजाविधान् महासाया र्थसाधक ॥ महासायाजगिजागा महासायदु
जालीक ॥ ८ ॥ महादान ॥ पुनिशु ॥ महागील धजागुली ॥ महाक्रान्तिधजाभीजा म
हाविर्यपत्राकुस ॥ ९ ॥ महाध्वनसमाधिषा महापुष्पगजिप्रवृक् ॥ महावज्रमहा
पायप्रलीधीज्ञानसागर ॥ १० ॥ महाभैरी मया मया महाकाश्लिकागुधी ॥ महापुष्प
महाधीमान महापाय महाकृति ॥ ११ ॥ महाश्रुधिवलायगा महावर्गा महायव ॥ स

॥ ६

महद्विकामहगम्भा महाबलपत्राकुस ॥ १२ ॥ महारुवादि संतुर्ग महावज्रधजाद्य
न ॥ महाकृजा महाजोदा महारुय रुयंकज ॥ १३ ॥ महाविद्यामाना ॥ महासक्तुगु
पू ॥ महायान नयात्रुडा महायान नयाद्रुमः ॥ १४ ॥ बज्रध्वनमहासंउल्लेखीयचतु
द्विग ॥ १५ ॥ महावैराचना बुद्धा महाभौती महासूनि ॥ १५ ॥ महासंक्तुनयाद्रुग
महासक्तुनयालक ॥ १ ॥ दगपात्रमिगापाका दगपात्रमिगापुय ॥ दगपात्रमि

नाम

गायत्री दण पात्रमिग नय ॥ २ ॥ दण रमि श्वजा ना थ दण रमि प्रमि लि न ॥ दणः
अन विणु द्वा सा दण अन वि सु दु ध क ॥ ३ ॥ दण का प्रा दण थ र्थ मृति द्वा दण
वजा वि णु ॥ अण थ वि श्व थ क जा दण का प्रा व गी महान् ॥ ४ ॥ अनादि नि ष्य पं ॥ ७ ॥
ना सा गु द्वा सा न थ ना स क र न वा दि य थ वा दि न थ का जी अ न न्य वा क ॥ ५ ॥
अ द या इ द य वा दि च र न का टी व्य व लि न ॥ ने जा स्य लि इ मि ना द ॥ क टि थ म ग

ली क ज ॥ ६ ॥ सर्व गुं ग म मा घ ग नि स थ ग न म ना ऊ व ॥ जि ना जि ना ज वि ज यो च कु
व रि म हा व ल ॥ ७ ॥ गी त मूर व्या ग स आ र्था ग र स ग ग स प नि र्व गी ॥ महान् र ता वा
वा र्ध ज या अ न न्य थ म हा न य ॥ ८ ॥ वा जी श्व वा क नि वा गी वा च स्य नि ज न क जी ॥
स न्य वा क स न्य वा दि च च ॥ ९ ॥ अ व व रि का कू ना ग मी र व डू
प र्थ क ना य क ॥ ना ना नि र्था न नि र्था ना म हा र्ण क का ज न ॥ १० ॥ अ ह स्ती स ग वा

नाम

८

हिङ्गुवी गजा गभजि गच्छिय ॥ कृमपा फाहय पाफ गीगिरुगा कनाविलः ॥ ११ ॥ विद्या
चजनसंपन्नः ॥ सुगगा ला कवित्यजः ॥ निममाजिजहं काज ॥ सत्यदयनयस्ति नः ॥ १२ ॥
संसाजपाजकरी स्तु कृमकृत्यस्तु जस्ति नः ॥ केवल्यं ज्ञाननिस्तु नपुञ्जशु फाविदाजन ॥ ८ ॥
॥ १३ ॥ सधर्मा धर्मजारास्वानला काला क कजः पज ॥ धर्मध्वजा धर्मजा जाः २ गुया
मार्गपदग क ॥ १४ ॥ सिद्धार्थसिद्धसंकल्प सर्वसंकल्पवर्जिनः ॥ निर्विकल्पा ऊ

या धनुः धर्मधनुः पजावया ॥ १५ ॥ पृथ्वान्मृत्पृथ्वी संराजा ज्ञानं ज्ञाना कजस्मद्ग ॥
ज्ञानवासदग ज्ञानि सताना दयसंरुग ॥ १६ ॥ गभधमा विश्वजघागी ध्यानधया
धिया म्पिगि ॥ पुण्या सवधा कचज पजमा धर्मा का मधक ॥ १७ ॥ पंचकाया सका वृ
द्धः पंचज्ञाना सको विरु ॥ पंचबुद्धा समकूट पंचचक्र जसंग धक ॥ १८ ॥ ऊन
कः सर्व बुद्धानां बुद्धपुत्र पजावज ॥ प्रज्ञारवा रवा यानि धर्मयानि रवानक ॥

नाम

५२

॥ १९ ॥ घने कलाजा वजा सा सधा जा गा जग सगी गगना हवः स्वयं ह ॥ पुज्ज ज्ञ
नाना महान् ॥ २० ॥ वेजावना महादीपि ज्ञान क्षागे विजावन ॥ जगत्पदिया
ज्ञाना स्को महापुजापरास्वज ॥ २१ ॥ विद्याजाजा ग्रमने एम मनुजाजा महार्थकन
॥ महा लोपा हने लोपा विश्वदगा विवयस्यनि ॥ २२ ॥ सर्वबुद्धात् महावा एम जग
दानन्दलावन ॥ विश्वत्रुपिविधानाच पूजमाना महान्नापि ॥ २३ ॥ कुलशयध

५३

जामे शो महासमयमनुधक ॥ जज्ञशयधन ॥ एम बुधमि या ना हं मदगक ॥ २४ ॥
श्रमाद्यपा एम विजयी वजपा एम महाग्रह ॥ वजा कु एम महापा एम वजनेन वही
कज ॥ २५ ॥ सुविशुद्धधर्म धातु ज्ञानमथा पंचविंगती ॥ २६ ॥ कीधजा खन
स्को ही म ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥
यमान का विद्युजाजा वजव एम हयंकज ॥ विद्युश्रवजा हवज मायावजा महादज ॥

नाम

१२

कश्चनगुल्लार्थात्ताकाचार्याविगमजद ॥ नाथकुणागिस्ताकाक ३ गज नं नायनिज
दुज ॥ ३ ॥ गगनातागसंताग ४ सर्वदुःखनासागज ४ ॥ अविद्या दुःकागसंताग
हवपंडजदाजनः ॥ १ ॥ गमितागवसंताग ४ संताजार्थवपाजग ४ ॥ जनागिथ्यक १२ ॥
मरुगा ४ सम्यक्बुद्धरूप ॥ ४ ॥ हि दुःखदुःखगमनस्थका ४ नककिमुकिग
४ ॥ सर्वावजनविनिर्मुक्ता आकागसमगाङ्ग ४ ॥ ९ ॥ सर्वदुःखमलानीनस्थ ॥

नध्वगमिंगन ॥ सर्वसत्त्वमहानागगुल्लगावजगावज ॥ १० ॥ सर्वोपधिविनिर्मुक्ता
व्यामवत्तानिस्तुतिग ४ ॥ महाचिन्तामतिधज ४ सर्वजलाहुमाविदु ४ ॥ ११ ॥ महाक
त्यस्तुत्कीनामहादायटाहुम ४ ॥ सर्वसत्त्वार्थकत्तुर्लोहिनेविसत्त्ववत्तज ४ ॥ १२ ॥
सुहासुहं ४ काजदुःखसर्वदुःखसमयीविदुः ४ ॥ सत्यनिदुःखवत्तदुःखविमुक्तिमुयकावि
दुः ॥ १३ ॥ गुलीगुल्लं ४ धर्मदुःखसत्तामंगल्यादय सर्वमंगलमागत्य ४ कीर्तिस्तुती

नाम

१३

यगः १७४ ॥ १४ ॥ महासर्व महाश्वसा महान न्ना महानि ॥ सत्कात्र ४ सत्कृतिः
रुमि ४ प्रमादश्रीयुगन्तुमि ४ ॥ १५ ॥ वज्र २५५ वज्र २४२ गज ४ गज २५५ गुम ॥
महाहवाजिपुवजानि ४ गवहयनागज ४ ॥ १६ ॥ सिखेगित्वही ऊटिला ऊटिमी छीकि ॥ १३ ॥
जिदिमान् ॥ पञ्चानन पञ्चगित्व ४ पञ्चवीज कः १७ ॥ महावृगधजा मो जी वृम
वाजिबुगाहुम ४ ॥ महानयानपीनि ४ ॥ लानका १७ नमायती ॥ १८ ॥ वृकविद्याकः

२५५ वृका वृकनिर्वाह माफवान् मुकि मा ऊवि मा ऊ ग ॥ विमृकि गान् गगिव ॥ १९ ॥
निर्वाहनिर्वाह ४ गान् ४ शिथानि र्यानमनुक ४ सख दुःखार्थ कनिष्ठा ४ वेजा गधमपधी
ऊय ४ ॥ २० ॥ अऊथा इन्द्रमा २५५ कनिजा तासानि जऊन ४ ॥ निक्कलसर्व गान्मापि
गृष्ठावि ऊमनाथुम ॥ २१ ॥ अलजा विलजा विमला वाक्कदापनिजामयः ॥ सप्रवृ
द्धा विवृद्धात्मा सर्व ४ सर्व विलज ४ ॥ २२ ॥ विज्ञानधर्म गानी गान्ज्ञानमद्ययूपः

नाम

१४

धक ॥ निर्विकल्पा निलाहागल्ल चसंबुद्ध काय कुरु ॥ २३ ॥ अनादिनिधना बुद्धा अ
दिबुद्ध निजल्लय ॥ अत्रिकच कुजमला कुन मूर्ति सधुगुन ॥ २४ ॥ वागीश्वरा म
हावादि वादिजा द्वादि पूजव ॥ वेदना स्वजा वलिहो वादिसिंहा पजा जीन ॥ २५ ॥ स १४ ॥
मगदगिपामा घक्क जमालि सुदगन ॥ श्रीवल्लसप्रसादोपि ॥ शार्वा स्वज कन धूमि ॥ २६ ॥
महाविषवज ॥ य ४ ॥ गल्ल हर्षा निजल्लय ॥ अगव शेषक नर ॥ कंग व्याधि महाजि पू

॥ २७ ॥ उलाक्क गीजकं ४ कान् ४ श्रीमान्द्रुमधुल ॥ दगदिह्म मापर्याना धर्म धज
महाकुय ॥ २८ ॥ जगकु शेकविपुल्ला मे शी कज्जन मंगुल ॥ पमन ह्यश्वज ४ श्रीमान् जल
कुशी महाविह ॥ २९ ॥ सर्वबुद्ध महाजाजा ॥ सर्वबुद्धा स्मरावधक ॥ सर्वबुद्ध महायाग स
र्वबुद्ध कलासन ॥ ३० ॥ वज्रजल्लारिथ कशी ४ सर्वजल्लाधिप्यश्वज ॥ सर्वलाक्क श्वजप
नि ४ सर्ववज्रधजाधिप ॥ ३१ ॥ सर्वबुद्ध महाचिह्नु ४ सर्वबुद्ध मनागनि ॥ सर्वबुद्ध महा

नाम

काम सर्वबुद्धसत्त्वनि ॥ ३२ ॥ वज्रसूर्या महालाका वज्रइन्निमलपुरु ॥ विजागढिम
हाजागमविश्ववर्द्ध जलपुरु ॥ ३३ ॥ सर्वबुद्धावज्रपर्यकावद्धसंगीगी धर्मधक ॥ बुद्धपद्मा
रुव ४थीमानुसर्वरु ज्ञानकागधक ॥ ३४ ॥ विश्वमायाधजाजा बुद्धविद्या धजा महान्
॥ वज्रगी कुमहाखजा विशुद्ध ४पत्रमाकुज ॥ ३५ ॥ उत्पलकदमहायाना वज्रधर्ममहायु
ध ४ ॥ जिनजी दजगमीया वज्रबुद्धियथार्थविग् ॥ ३६ ॥ सर्वपात्रमिगाप्राप्ति सर्वरुमि

विहृषध ४ ॥ विशुद्ध धर्मनेजास्म सम्यग्ज्ञाननु हत्पुरु ॥ ३७ ॥ मायाजालमहाध्याग ४
सर्वगन्ताधिप ४पत्र ४ ॥ अगधवज्रपर्यका निः १गवा ज्ञानकायधक ॥ ३८ ॥ समनुरु
दसमनि ४क्षिनिगज्ञाजगद्धनि सर्वबुद्धमहागङ्गा विश्वनिर्वानचक्रधक ॥ ३९ ॥ सर्वरा
वस्वरावाग ४ सर्वरावस्वरावधक ॥ अनूत्याधधर्मविश्वार्थ ४ सर्वधर्मस्वरावधक ४
॥ ४० ॥ गुकद्वेषमहाप्राङ् ४ सर्वधर्माववाधधक ॥ सर्वधर्मोसिसमया रणानुम

नाम

१६

त्रिजगधी ॥ ४१ ॥ किमिदं सप्रसंनत्ता सम्यक्बुद्धवाधिधक ॥ प्रत्यवदु सर्वबुद्धानां
ज्ञानार्थि ॥ सप्रसा स्वज ॥ ४२ ॥ प्रत्यवदु सज्ञानगथा द्वावस्त्रात्रिंशत् ॥ ४३ ॥ ॐ
साथं ॥ साधक ॥ पत्र ॥ सर्वपापविधेधक ॥ सर्वसत्त्वानामानार्थ सर्वसत्त्वार्थमाधक ॥ ४४ ॥
॥ १ ॥ कृगसंगमसर्जक ॥ श्रुज्ञानत्रिपुद्वयं ॥ ४५ ॥ धी ॥ गत ॥ धनधीमान् ॥ वीजवीर
स्त्रपधक ॥ २ ॥ वारुदधुसगाद्धप ॥ पयनिद्धपनर्हण ॥ शीमत्तु गृहजाला ॥ गमः

गगनाद्गगनर्हणः ॥ ३ ॥ नुकपादनजाका कामहीमधुलनलस्त्रिंशत् ॥ वक्ता नृगिरव
जाकाक ॥ पादांगुलनस्त्रिंशत् ॥ ४ ॥ नुकार्थद्वयधर्माथ ॥ पत्रमाथविद्यन ॥ वज्र ॥
नानाविद्धिपिप्रपार्थ ॥ विदुविज्ञानसर्जक ॥ ५ ॥ श्रुगपरावार्थजनि ॥ सत्यगात्रनिज
गधी ॥ रुवजागम्यनिन ॥ रुवहुयमहाजनि ॥ ६ ॥ गुह ॥ गु ॥ श्रुधवज्र ॥ गजचन्द्रक
गुपरावासाक ॥ मधुलकाया ॥ महाजागनरवपुत्र ॥ ७ ॥ ॐ नृनीलाग्रसचीजा ॥ महा

नाम

१७

नीलकचाग्रधरः ॥ महासतिमयवृक्षीवृद्धनिर्मानरूपतः ॥ ८ ॥ लोकधनुगताकं
पी. नृपिपालमहाकुसुमः ॥ महास्मृतिधनसुश्रुतुस्मृतिस्माधिजातः ॥ ९ ॥ वा
॥ १० ॥ सर्वसत्त्वमहासंगमशृंगारस्यमः ॥ सर्वसत्त्वमनाजः ॥ सर्वसत्त्वमना
नाजवः ॥ ११ ॥ सर्वसत्त्वद्वितीयार्थः ॥ सर्वसत्त्वमनाहजः ॥ पंचस्कंधार्थनत्वरु ॥ पंच
निःसंग

स्कंधविसृद्धधरः ॥ १२ ॥ सर्वनिर्यासकारिस्तु ॥ सर्वनिर्यासकाविदः ॥ सर्वनिर्यास
मागस्तु ॥ सर्वनिर्यासदणकः ॥ १३ ॥ द्वादशांगरवापागा ॥ द्वादशकात्रसृद्धधरः ॥
चतुःसंयनया कालाश्रयज्ञानाववाधधरः ॥ १४ ॥ द्वादशाकात्रसंयार्थ ॥ द्वादशका
त्रनसविन् ॥ विंगत्या कालसंवाधिविद्वत्सर्ववित्तजः ॥ १५ ॥ अमयवृद्धनिर्मासः ॥
कायकाटिविहावकः ॥ सर्वरुनाहिसमय ॥ सर्वविद्वत्संयार्थविन् ॥ १६ ॥ नानाया

नाम

१८

ननयापायजगदर्थविहावक ४ सर्व कृत्ता हो समया ४ सर्वविशुद्धार्थविगं यानगो
नयनिर्याम ४ उक यानरुल्लिख ४ ११ ॥ कृगभगुविशुद्धात्मा कर्मभगुद्धयंक
प्र ॥ उधादधीसमशोक्त यागका नाजनि ४ गं ॥ १८ ॥ कृगभयं कृगसे कृग ४ स
पुहिनसवासन ४ १५ ॥ सर्वसंज्ञप
हीना ॥ विज्ञानात्मानि जा धधक ॥ सर्वसत्त्वमनाविषय सर्वसत्त्वमनागति ॥ २० ॥

१८

सर्वसत्त्वमनागत्तु सर्वसत्त्वमनागग ४ ॥ सर्वसत्त्वाज्ञादिसर्वसत्त्वमनाजय ॥ २१ ॥ सि
द्धांकाविशुमापगग ४ सर्वताकिविवर्जित ४ ॥ निसंदिग्धमनिभुधसर्वार्थविगुत्ता
त्मक ॥ २२ ॥ पंचस्कंधार्थविज्ञाज ४ सर्वकुत्ताविहावक ४ ॥ उककुत्तासि संवृद्ध सर्व
बृद्धस्वतावधक ॥ २३ ॥ अनंगकायकायागु ४ कायकाटिविहावक ४ ॥ अंगवदप
संदर्गाजिस्सककुमहामसि ४ ॥ २४ ॥ समगाज्ञानगधगुर्विगति ॥ २५ ॥ सर्वस

नाम

१९

बहुवाध्या बहुवाधिननुज ॥ अनऊजामनुयानिमलमकुंकलशय ॥ १ ॥
सर्वसंगार्थनका महाविनुजनऊज ॥ पंचाऊजामहासन्ध्याविनुशुन्यगगाऊज ॥
॥ २ ॥ सर्वकाजनिनाकाज ॥ दगाहोद वीरुधक ॥ अकल ॥ कलसमीनव
उर्थध्यानकाटिधक ॥ ३ ॥ सर्वध्यानकलारि ॥ समाधि कलरुगविः ॥ स
माधिकायकाया ॥ ४ ॥ सर्वसंगकायजान ॥ ४ ॥ निर्मानकायकाया ॥ ५ ॥

निर्मासर्वगंधक ॥ दगादिविधनिर्मानयथावजगदर्थक ॥ ५ ॥ दवाकिदवद
बहु ॥ सजंददानवाधिय ॥ अमजनुसजगु ॥ प्रमर्थ ॥ प्रमथग्वनः ॥ ६ ॥ उशीर्ष
रवकाकाजजकगा ॥ कुजगदु ॥ प्रप्यान्नदगादिलक ॥ धर्मदानपुमिमीहान ॥ ७ ॥
मैगोसन्नाहसन्नद ॥ कजुलावेसवलिग ॥ ८ ॥ पुस्तखर्जधनुर्वा ॥ ९ ॥ कृगज्ञानाजनऊज
॥ ८ ॥ माजजीमाजजीबीज ॥ यजुमाजहयानक ॥ ९ ॥ सर्वमाजधमऊर्गीसंबुद्धाली

नाम

॥ २० ॥

कनायक ॥ ५ ॥ वं च ४ पुष्कारि वाद्यं माननिय अमिष्य ॥ श्रुवनी योमा
मा न्या नमस्य पज मा गुनु ॥ १० ॥ कुलाय कजमगमि न्या मा पय्य कवि कुम ॥ श्रुवि
य ४ ॥ श्रुवि य ४ पुन ४ वृत्ति ४ ४ वृत्त नृत्तमि ४ ॥ ११ ॥ वाधिसत्ता महासत्ता ला का
नि न महादिक ॥ पुष्पापज मिना निव ॥ पुष्पापज मा गन ४ ॥ १२ ॥ श्रुवि वि सत्र वि
सर्व ४ सर्वा या रु ग पंक्त ४ ॥ सर्वा य मा म गि का का ॥ य रु ना धि य ४ पज ॥ १३ ॥

॥ २० ॥

धर्मदा न प्रमिः ॥ १ ॥ ४ ॥ स्व शुर्मदार्थ दणक ॥ पर्यु या स्य न मा ऊ ग नां निर्या ल श य या यि
नां ॥ १४ ॥ पज मा र्थ वि शु द्ध शी गुं ला क सूर ल म महान ॥ सर्व संपत्क जणी मान मं ऊ
शी ॥ शी म नां व ल ४ ॥ १५ ॥ कृष्ण नृत्तान नृत्तान गार्थ ४ पंचदश ॥ १६ ॥ नमस्तु वज
दवजाग ॥ रु ग का टि न मा इत्त न ॥ न मा स्त स नृत्तान गार्थ ४ वृद्ध वाधि न मा इत्त न ॥ १७ ॥
वृद्ध जाग नमस्तु वृद्ध काय न मा नम ४ ॥ वृद्ध पीति न मा स्त स वृद्ध मा द न मा नम ४ ॥

॥ २ ॥ ब्रह्मस्मिन् नमस्तुभ्यं ब्रह्मज्ञानमो नमः ॥ ब्रह्मवाचनमस्तु ब्रह्मरावनमा
 नाम नमः ॥ ३ ॥ श्रुवाह्वानमास्तु नमस्तु ब्रह्मसंख्ये ॥ गगनस्थवनमस्तुभ्यं न
 मस्तु ज्ञानसंख्ये ॥ ४ ॥ मायाज्ञानमास्तुभ्यं नमस्तु ब्रह्मनाटक ॥ नमस्तु सर्वस
 ॥ २१ ॥ स्वस्था ज्ञानकायनमास्तुभ्यं नमस्तु ॥ ५ ॥ पंचगथागर्भं नमस्तु ॥ ६ ॥ ॐ स
 र्वधर्मा रावस्वराव विष्णु हवः श्रु श्रु श्रुः पु कृ नि प जि णु ह्य ॥ सर्वधर्मा यद न सर्व
 च ॥

गथागुण ज्ञानकाय मं कृणा पत्रि णु द्वि नाम पादाय नि ॥ श्रु श्रु ॥ सर्वगथागर्भं हृदयज्ञ
 हृदयं कौं रगवन ज्ञानमूर्ते वागीश्वर महावाच सर्वधर्मा गगनात्पति णु ह्व
 र्मा धर्मा ज्ञानगर्भं श्रु ॥ मं कृ विं न्या ग ॥ ७ ॥ ॐ ॥ अथ वज्रधजणीमान हृदयस्तु क
 गां जीति ॥ प्रथम्यनाथ संवृद्धरुगवर्कं गथागर्भं ॥ १ ॥ श्रु श्रु श्रु वि धे नार्थे गुह्य
 देवजपातिरि ॥ संसाह को धजा जाने ॥ प्रावाच च त्रिदं वज्र ॥ २ ॥ श्रु मादा मह

नाम

॥ २२ ॥

माधःसाधुमाधुःसुखापिण्डः॥ कृणास्माकं महानार्थः सम्यक् ब्रह्मप्रापकः॥ ३ ॥ ज
गन्मयस्य त्रयस्य त्रिमुक्तिरूपस्य काञ्चनः॥ गुणमा र्गविषुः शयं माया जालानया
दिभिः॥ ४ ॥ गंतीनादोजवेषुत्या महार्थाङ्गगदर्थकः॥ ब्रह्मना विषया रुष संस्यः॥ २२ ॥
सं ब्रह्मदगि नृहृदि॥ ५ ॥ उपसंज्ञनगमथपंचः॥ ॥ श्रायं माया जालाया उगः॥
साहगिकायां महयागनंकाः पाणि समाधिजालपनलातः शीगमममनिरापिण

भगवत्पथागत

यो सौ धर्मसुगतं गदितं पठन्ने भक्ति भावान्मात्रहीनं कथमापि पदं पाद गाथा
क्षरं वा॥ जिह्वा दोषैः पवन चरितैः श्लेष्म दोष प्रचारै र्युयं बुद्धाः स्वभवनगता
बोधिसत्त्वाः क्षम ध्वं॥ ॥ अनेन पुण्ये न च दोष हीनं नित्यं सिधे वै स सुखो
दयं च नमोस्तु बुद्धाय अनन्त गोचराय नमोस्तुते सत्य प्रका मुने॥ सत्य प्रति
ष्ठाय प्रजा च मोक्षसे सर्वे च कामाः सफला भवन्तु॥ ॥ मनो वांछा सर्व सिद्धि रस्तु॥ ॥

नामसे अक्षये

नाम

रुगवनामं कृणीकनसस्वस्यपत्रमार्थनामसंगीनिषजिसमाफा ॥ ॐ ॥ यध ॥

मर्माहगुपरावाकगुर्गवाकथंगनद्ववदगुवाधयात्रिनाधुवम्वादिमडागुवर्त ॥ १ ॥

संस्वग १०४५ मि आसिनवदि ४२८ गन ७ नाऊवसोषूहथानामसंगीनि दवजाणि ॥ २३ ॥

याकाय पुंन्यजा ऊंवायाकलसूरंमं ४ ॥ ॐ ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ गुरुऊं ॥ ॥

अमरकवि

KY

3807